315hi31B

31

सांस्क तिक संप्रेषण

जब आप छोटे थे तो आपके दादा–दादी ने आपको राजा–रानियों, जादुई घटनाओं और पशु–पक्षियों की कहानियां तथा पुराने जमाने की अन्य कहानियां जरूर सुनाई होंगी। उनमें से अनेक कहानियां रामायण और बाइबल जैसे महाकाव्यों और धार्मिक ग्रंथों से या फिर पंचतंत्र या अलिफ लैला जैसे कथा–संग्रहों से ली गई हैं। इन कहानियों के माध्यम से हम सबने अपनी सांस्कृतिक विरासत के अनेक पहलुओं को अपनाया। संस्कृति विभिन्न तरीकों से संप्रेषित की जाती है–मौखिम रूप से, लिखित रूप से, संगीत के माध्यम से, और आजकल फिल्मों और टेलीविजन द्वारा भी।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप :

- भाषण लेखन और मुद्रण सांस्कृतिक संप्रेषण में किस तरह सहायक होते हैं इसके बारे में समझा सकेंगे;
- सांस्कृतिक संप्रेषण की कुछ पद्धतियों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- विभिन्न विचारों को संप्रेषित करने में संगीत के उपयोग का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए विभिन्न सांस्कृतिक रूपों का इस्तेमाल किस प्रकार किया गया था, इसकी व्याख्या कर सकेंगे।

31.1 संस्कृति कैसे संप्रेषित की जाती है

क्या आप भाषा के बिना विश्व की कल्पना कर सकते हैं? भाषा मानव–समाज की मूलभूत विशेषता है। यह लोगों के लिए एक–दूसरे को समझने का साधन ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विचारों के संप्रेषण का माध्यम भी है। आपस में बोली जानेवाली भाषा लोगों को एक–दूसरे से जोड़ती भी है और उनकी एक–दूसरे से अलग पहचान भी बताती है। पंजाब के लोग अपनी समान भाषा के कारण परस्पर जुड़ते भी हैं, पर उन लोगों से अलग भी दिखते हैं, जिनकी मात भाषा पंजाबी नहीं। क्या आप जानते हैं कि पंजाबी पाकिस्तान की भी दो सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओं में से एक है?

उपमहाद्वीप में विभिन्न देशों के लोगों द्वारा बोली जानेवाली एक अन्य भाषा बँगला है।

भाषा और संस्कृति का प्रसार भौगोलिक कारकों से प्रभावित होता है। आस–पड़ोस के क्षेत्रों में रहनेवाले लोग समान या मिलती–जुलती भाषाएँ बोलते हैं। हजारों मील दूर रहनेवाले लोगों की मात भाषा बहुत अलग होती है। वह इसलिए कि परिवहन के आधुनिक साधन विकसित होने से पहले दूर–दूर तक फैले इलाकों में संप्रेषण कठिन था। संस्कृतियाँ अपेक्षाकृत अलग–अलग विकसित होती थीं और बहुत भिन्न होकर रह जाती थीं।

घने जंगलों वाले और पहाड़ी इलाकों में संप्रेषण आज भी कठिन है। एक पहाड़ी या घाटी के एक तरफ रहनेवाली जनजाति को उसके दूसरी तरफ कुछ ही किलोमीटर दूर रहनेवाली जनजाति के बारे में हो सकता है, पता तक न हो। इसलिए उनके द्वारा बोली जानेवाली भाषाएँ बहुत भिन्न हो सकती हैं।

लेकिन उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे क्षेत्रों में, जहाँ के विशाल मैदान नदियों द्वारा आपस में अच्छी तरह जुड़े हैं, लोग प्राचीन काल में भी आसानी से यात्राएं कर लेते थे। इसलिए उनमें नियमित अंतःक्रिया की वजह से समान भाषाएं और रीति–रिवाज विकसित हो गए।

यहाँ तक कि जहाँ विशाल क्षेत्रों में हिंदी या तमिल जैसी एक ही भाषा बोली जाती है, वहाँ एक जिले से दूसरे जिले में उसके भिन्न रूप पाए जाते हैं। उनमें से कोई भी रूप इतना भिन्न नहीं कि उसे अलग भाषा कहा जा सके, इसलिए उन्हें उस भाषा की बोलियां कहा जाता है।

उच्चरित भाषा संप्रेषण के सबसे महत्त्वपूर्ण साधनों में से एक थी और अभी भी बनी हुई है। लेकिन लिपि के आविष्कार ने संप्रेषण की व्यापकता बढ़ा दी। संदेश अब दूर–दूर तक भेजे जाने लगे और बाद तक सुरक्षित रखे जाने लगे।

भारत में लिपि 4000 वर्ष पहले ज्ञात थी। हड़प्पा की लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है। 1800 ईसा पूर्व के आसपास हड़प्पा सभ्यता के पतन के साथ लिपि भी खो गई। लिपि की जानकारी तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पुनः प्रकट हुई। ब्राह्मी नामक यह लिपि समस्त आधुनिक भारतीय लिपियों की जननी है।

प्रारंभ में शासकों और अमीर लोगों ने महत्त्वपूर्ण दस्तावेज चट्टान की सतहों, पत्थरों के फलकों और ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण करवाए थे। कपड़ा, चमड़ा, पेड़ की छाल जिसे भोजपत्र कहा जाता था और ताड़ के पत्ते जो तालपत्र कहलाते थे, लिखने के काम आते थे।

आपके विचार में प्रारंभिक समय में किस तरह की पुस्तकें हुआ करती थीं? धार्मिक ग्रंथ होते थे जो पुजारियों द्वारा प्रयोग में लाए जाते थे। कानून की किताबें, जिन्हें शास्त्र कहा जाता था, राजाओं और उनके मंत्रियों के लिए लिखे जाते थे। अमीरों के मनोरंजन के लिए नाटकों और काव्यों की रचना की जाती थी। जाहिर है कि ज्यादातर किताबें केवल विशेषाधिकारप्राप्त थोड़े लोगों के लिए ही होती थीं।

लेकिन तब महाभारत (जिसके बारे में आपने पाठ संख्या 30 में पढ़ा है) जैसे महाकाव्य, जातक कथाओं और हितोपदेश आदि में संग हीत लोकप्रिय कथाएं और पुराणों में बड़ी संख्या में शामिल मिथकीय आख्यान भी थे। इनमें से ली गई कहानियां पेशेवर

कथावाचकों, भाट–चारणों और यहाँ तक कि स्थानीय मंदिर के पुजारियों द्वारा भी मौखिक रूप से संप्रेषित की जाती थीं। कहानियां सुनाने के दौरान समय के साथ उनमें अनेक भिन्नताएं पैदा हो गईं। इसलिए आज हम लोकप्रिय आख्यानों के अनेक रूप देखते हैं। इस तरह पुस्तकों ने अनेक लोगों के जीवन को स्पर्श किया, बावजूद इसके कि बहुत कम लोग ही लिख–पढ़ सकते थे।

हर पुस्तक की प्रति हाथ से तैयार करनी पड़ती थी। ये हस्तलिखित प्रतियां पांडुलिपि कहलाती हैं। पांडुलिपि–लेखन मध्यकाल में एक विशिष्ट कला बन गई। लिपिक सुंदर हस्तलेख इस्तेमाल करते थे, जिसे खुशनवीसी कहा जाता था। प ष्ठ अक्सर सुंदर चित्रों से सजाए जाते थे। पांडुलिपियों की प्रतियां तैयार करना, एक श्रमसाध्य प्रक्रिया थी, इसलिए बहुत कम प्रतियां ही तैयार की जा सकीं।

मुद्रण की शुरुआत 16वीं शताब्दी में हुई। पुस्तकें अब कम समय और लागत में बहुत बड़ी संख्या में तैयार की जाने लगीं। लेकिन चूंकि बहुत कम लोग ही पढ़े–लिखे थे, अतः तात्कालिक प्रभाव सीमित था। 19वीं शताब्दी में एक ज्यादा नाटकीय परिवर्तन हुआ, जब राष्ट्रवादियों और समाज–सुधारकों ने छापेखाने और मुद्रण–प्रौद्योगिकी का भरपूर प्रयोग किया।

भारत में पहला समाचारपत्र 1760 में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया। इसके बाद अन्य अनेक लोगों ने समाचारपत्र प्रकाशित किए। ये समाचार पत्र भारत में अंग्रेजों को यूरोप के बारे में सूचना देने का काम करते थे।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में अनेक समाचारपत्र देशी भाषाओं में छपने शुरु हो गए। वे राष्ट्रवादियों द्वारा छापे जाते थे, जिनके मन में भारतीयों का हित था। समाचार और विचार चंद शिक्षितों तक ही नहीं, बल्कि उनके माध्यम से अन्य अनेक लोगों तक पहुंचाए जाते थे। अनेक चिंतकों ने देखा कि भारत पर ब्रिटिशों के अधिकार को तभी खत्म किया जा सकता है, जब पहले भारतीय समाज की परंपरागत बुराइयां खत्म कर दी जाएं। इन सुधारकों ने जनमत तैयार करने के लिए सीधे अभियान ही नहीं चलाया, बल्कि प्रेस का भी इस्तेमाल किया। बंगाल के राजा राममोहन राय ऐसे ही एक सुधारक थे।

1821 में राजा राममोहन ने बँगला में 'समाचार कौमुदी' नामक समाचार पत्र का और 1822 में फारसी में 'मीरातुल अकबर' तथा अंग्रेजी में 'ब्राह्मनिकल मैग्जीन' का प्रकाशन शुरु किया। इन समाचारपत्रों के जरिये उन्होंने स्त्री–शिक्षा और विधवा–पुनर्विवाह की वकालत की और सती तथा जाति–प्रथा की बुराइयों पर हमले किए। उन्होंने विश्व के प्रमुख धर्मों की सर्वोत्तम शिक्षाओं पर आधारित अपनी एक आदर्श समाज की कल्पना को रेखांकित करने वाले अनेक पर्चो भी छापे। उन्होंने ब्रह्म समाज नामक संप्रदाय की स्थापना भी की, जिसमें बंगाल के बहुत से शिक्षित और प्रगतिशील लोग शामिल हुए। छापेखाने की बदौलत ही राममोहन के विचार इतने बड़े जनसमूह तक पहुंच सके। प्रेस की ताकत का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि समाज–सुधार के उनके विचारों का विरोध करने के लिए 1822 में एक प्रतिद्वंद्वी अखबार 'चंद्रिका' भी प्रकाशित होने लगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समाचारपत्र और पत्रिकाएं केवल दुनिया की घटनाओं के बारे में सूचना ही नहीं देते, बल्कि हमारे सोच–विचार के तरीके को भी गढ़ते हैं। विचारों और

द ष्टियों का आदान–प्रदान बेशक अति प्राचीन काल से होता रहा है। किंतु संप्रेषण के आधुनिक रूपों के संदर्भ में खास बात यह है कि विचारों का संप्रेषण एकतरफा हो गया है। किसी समाचारपत्र का मालिक जहाँ अपने पाठकों के विचारों को प्रभावित कर सकता है, वहीं पाठक उसके विचारों को प्रभावित नहीं कर सकते। क्या आप वैश्वीकरण से इसकी समानता देखते हैं, जिसके बारे में आप पाठ संख्या 29 में पढ़ आए हैं।

पाठगत प्रश्न 31.1

1. किस लिपि से ज्यादातर आधुनिक भारतीय लिपियां निकली हैं?

   ____

2. प्रारंभिक समयों में लिखी गई पुस्तकों के दो प्रकारों के नाम बताइए।

   ____

3. पांडुलिपि–निर्माण महंगा क्यों था?

   ____

4. सही या गलत का निशान लगाइए :

   (क) भाषा संप्रेषण का साधन नहीं है।

   (ख) हितोपदेश कहानियों का एक संग्रह है।

   (ग) राममोहन 19वीं शताब्दी में प्रेस का इस्तेमाल करनेवाले अकेले सुधारक थे।

   (घ) लिपि ने लंबी दूरी के संप्रेषण को संभव बना दिया।

31.2 संस्कृति के वाहक के रूप में संगीत

संगीत और न त्य संस्कृति की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में शामिल हैं। गीत और न त्य में साथ देने के लिए प्रारंभिक मनुष्य ताली बजाता था या ताल मिलाने के लिए छड़ी से धरती को पीटता था। क्रमिक रूप से अनेक प्रकार के ढोल और बाजे इस्तेमाल किए जाने लगे। गरबा गुजरात के, कथकली केरल के और गिद्दा तथा भांगड़ा पंजाब के लोकन त्यों के उदाहरण हैं। ये न त्य त्यौहार मनाने, महत्तवपूर्ण समारोह आयोजित करने और विभिन्न प्रकार की भावनाएं व्यक्त करने के लिए और कभी–कभी विरोध के एक तरीके के रूप में भी किए जाते थे और आज भी किए जाते हैं।

लोक गीतों में वसंत, वर्षा के आगमन या अनाज पकने का उत्सव मनाया जाता है, जो सबके सब कृषि–चक्र पर केंद्रित हैं। राजगीरों और कुम्हारों के गीत भी होते हैं। आपने भारी बोझ उठाए चिनाई–कारीगरों को गाते और उनके दल को उन्हें ध्यान से सुनते देखा होगा, जिनके बोल उनके काम से संबंधित होते हैं।

स्त्रियों द्वारा स्त्रियों से संबंधित गीत भी खूब मिलते हैं, जिनमें परदेस गए प्रेमी की प्रेमिका का दर्द, शादी के बाद पीहर छोड़कर ससुराल जाती लड़की की पीड़ा, यहाँ तक कि सास–बहू के झगड़ों का भी वर्णन होता है।

लोकसंगीत स्वभावतः सहभागितापूर्ण होता है। वह लोगों के अनुभव के साथ विकसित होता है। इसलिए लोक कला के बारे में यह कहा जा सकता है कि उसका 'उपयोग' उसके जनकों द्वारा ही किया जाता है।

लोक–संस्कृति किसी श्रोता–वर्ग या दर्शक–वर्ग के लिए नहीं होती। तथापि, आधुनिक युग में इस संस्कृति का मूल उद्देश्य बदल गया है। इसलिए कभी–कभी आप लोक–न त्य मंच पर होता पा सकते हैं, जिन्हें दर्शक देख रहे होते हैं।

पाठ संख्या 29 में आपने शास्त्रीय संस्क ति के बारे में पढ़ा था। शास्त्रीय अथवा शास्त्रीय संगीत, संगीत का अति विकसित रूप है, क्योंकि वह सूक्ष्म नियमों पर आधारित होता है। उसे संगीत का व्याकरण कहा जा सकता है। उसके गायन या वादन (किसी वाद्य पर) के लिए लंबे समय तक गहन प्रशिक्षण अपेक्षित है। किंतु उसे सुनकर हर कोई खूब आनंदित हो सकता है। वस्तुतः फिल्मों और लोकगीतों की अनेक धुनें शास्त्रीय रागों या उनके सरलीक त रूपों पर ही आधारित हैं। सदियों से शास्त्रीय और लोक–संगीत दोनों ने गहन अंतःक्रिया की है और एक–दूसरे को सम द्ध किया है, यहाँ तक कि कभी–कभी दोनों के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना मुश्किल हो जाता है।

> शास्त्रीय संगीत को पहले राजाओं ने संरक्षण प्रदान किया। प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक था।
>
> आजकल व्यावसायिक घराने और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सांस्क तिक संगठन शास्त्रीय संगीत को संरक्षण प्रदान करते हैं।

संगीत के इन दोनों प्रकारों से जुड़ा संगीत धार्मिक प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वस्तुतः अनेक लोक और शास्त्रीय गीतों का विषय धार्मिक होता है।

भारत में धार्मिक संगीत का सबसे पहला उदाहरण सामवेद में मिलता है। इस 3000 साल पुराने ग्रंथ में बलि देते समय गाए जाने वाले वैदिक राग हैं।

मध्यकाल से भक्ति और सूफी संतों की कविताएं उनके अनुयाइयों और आम आदमी द्वारा गाई जाती थीं। ये गीत आज के भजनों और कव्वालियों से समानता रखते हैं। इन गीतों में अपने ईश्वर के प्रति निष्ठा और प्रेम व्यक्त हुआ है। कभी–कभी उनमें सांसारिक समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए देवी सहायता की कामना भी की जाती है। कव्वालियों और भजनों का अक्सर एक शास्त्रीय आधार और लोकप्रिय अथवा लोक–रूप होता है।

> भजन कभी–कभी आम आदमी के अनुभवों से संबंध रखते हैं। उदाहरण के लिए, कबीर के दोहों में बार–बार उनके बुनकरी के आनुवंशिक व्यवसाय का संदर्भ आता है।
>
> कव्वालियां खास तौर से दरगाहों अर्थात् सम्मानित सूफी संतों के मकबरों से संबंध रखती हैं। गुरूद्वारों में सिखों के पवित्र ग्रंथ 'ग्रंथ साहिब' को संगीत के रूप में गाया जाता है। ग्रंथ साहिब 10 सिख गुरूओं और साथ ही अनेक भक्ति व सूफी संतों के वचनों का संकलन है।

ग्रंथ साहिब का गायन करनेवाले व्यक्ति को न केवल धार्मिक प्रशिक्षण, बल्कि शास्त्रीय संगीत का भी प्रशिक्षण लेना होता है। इसीलिए वे 'रागी' कहलाते हैं।

संगीत का एक अपेक्षाकृत नया रूप है फिल्मी संगीत। प्रारंभ में फिल्मी संगीत शास्त्रीय और लोक–संगीत पर आधारित होता था। अनेक पुराने, लोकप्रिय फिल्मी गीत भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की धुनों पर आधारित हैं। किंतु फिल्मी संगीत ने कुछ नई विशेषताएं भी विकसित कीं। उसने भारतीय वाद्यों के अलावा मूलतः पश्चिमी शास्त्रीय संगीत से संबंध रखनेवाले ऑर्केस्ट्रा का इस्तेमाल किया। और आजकल तो हर दिन फ्यूजन संगीत की नई किस्में विकसित हो रही हैं।

'छाया' फिल्म का लोकप्रिय गाना 'इतना ना मुझसे तू प्यार बढ़ा' 18वीं शताब्दी के ऑस्ट्रियन संगीतकार मोजार्ट की सिंफनी पर आधारित है।'मुगले–आज़म' के प्रायः सभी गाने शास्त्रीय हिंदुस्तानी संगीत पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, 'मुहब्बत की झूठी कहानी' वाला गाना राग दरबारी कनद पर आधारित है।

फिल्मी गाने न केवल फिल्म के विषय, बल्कि प्रौद्योगिकीय चिंतन पर भी निर्भर करते हैं। शताब्दी के प्रारंभ में प्रारंभिक रिकॉर्डिंग प्रक्रिया एक बार में केवल 3–1/2 मिनट चल सकती थी। इसलिए एक फॉर्मेट विकसित हुआ, जिसके द्वारा गाना 3 से 3–1/2 मिनट तक चलता था। प्रौद्योगिकीय उन्नति के साथ अब रिकॉर्डिंग लगातार घंटों तक संभव हैं, लेकिन फिल्मी गानों ने स्थापित फॉर्मेट बरकरार रखा है। अगली बार जब आप रेडियो पर कोई गाना सुनें, तो खुद उसका समय ज्ञात कर सकते हैं।

संस्कृति की समस्त अभिव्यक्तियों की तरह संगीत भी विचार को आगे बढ़ाता है। बंगाल के बाउलों ने परंपरागत रूप से अपने गीतों के माध्यम से विश्व–बंधुत्व और निस्वार्थता के अपने संदेश फैलाए हैं।

भक्ति–गीत न केवल उपासकों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं, बल्कि अन्य लोगों को भी अपने समूह में शामिल कर लेते हैं। आज वैश्विक गांव में, जिसके बारे में आप पाठ संख्या 29 में पढ़ आए हैं, संगीत एक महत्त्वपूर्ण पुल के रूप में काम कर रहा है। नए रूपों का समोवश करते समय यह याद रखना आवश्यक है कि हम संगीत की अपनी सम द्ध विरासत को न खोएं।

पाठगत प्रश्न 31.2

1. लोकगीतों और न त्यों में किसका उत्सव मनाया जाता है?

2. रिक्त स्थान भरिए
   (क) __________ के लिए गहन प्रशिक्षण जरूरी है।
   (ख) भक्ति और सूफी संतों की रचनाए ˙ __________ और __________ कहलाती हैं।
   (ग) बंगाल के बाउल __________ और __________ के गीत गाते हैं।
3. सही या गलत के निशान लगाइएः
   1. लोकन त्य केवल मंच पर किए जाने के लिए होते हैं।
   2. शास्त्रीय और लोक–संगीत ने एक–दूसरे के साथ कभी अंतःक्रिया नहीं की।
   3. फिल्मी संगीत कभी–कभी शास्त्रीय धुनों पर आधारित होते हैं।

भारत और बाहरी दुनिया के बीच संपर्क दूसरी शताब्दी ई.पू. से दूसरी शताब्दी ई. के बीच बढ़ा। राजनीतिक और वाणिज्यिक अंतःक्रिया ने विचारों के आदान–प्रदान की ओर अग्रसर किया और सामाजिक व सांस्क तिक विकास व्यापक हुआ। बौद्ध धर्म नई परिस्थितियों के अनुकूल था और उसने भारतीय–यूनानियों और मध्य एशियाई लोगों को अपना अनुयायी बनाया। धर्मप्रचारक मठवासियों ने व्यापारियों के साथ यात्राएं कीं और मध्य एशिया में दूर–दूर के क्षेत्रों में मठ स्थापित किए। वहाँ से बौद्ध धर्म और आगे चीन तक फैल गया।

यूनानियों के साथ अंतःक्रिया ने मूर्तिकला का विकास प्रशस्त किया। प्रारंभ में बुद्ध को स्तूपों के प्रवेशद्वारों की नक्काशी में एक चक्र, कमल और पीपल के पेड़ आदि द्वारा केवल प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता था। अब वे अपोलो जैसे यूनानी देवताओं की तरह मानव रूप में प्रस्तुत किए जाने लगे।

इसी के समानांतर एक जटिल मिथक विकसित हुआ। पुनर्जन्म के लोकप्रिय विश्वास ने बुद्ध के सैकड़ों पिछले जीवनों में विश्वास की शुरुआत की। बुद्ध के ये पिछले जन्म बोधिसत्व कहलाते थे। बोधिसत्वों की कल्पना पूर्णतः अपने साथ रहनेवाले प्राणियों के कल्याण के लिए चिंतित रहनेवाले दयालु व्यक्तियों के रूप में की गई। उपासक अपनी समस्याओं की समाप्ति के लिए उनसे प्रार्थना कर सकते थे और सांसारिक कठिनाइयों में उनकी सहायता कर सकते थे।

31.3 सांस्कृतिक रूप और बौद्ध धर्म का प्रसार

आपने पढ़ा है कि धर्म हमारी सांस्कृतिक विरासत की विभिन्न विशेषताओं में से एक है। संस्कृति के माध्यम से धार्मिक विचार स्वतः संप्रेषित हो सकते हैं। आइए, बौद्ध धर्म का उदाहरण लेते हैं।

बुद्ध छठी शताब्दी ई.पू. में हुए। उन्होंने उपदेश दिया कि संसार का स्वरूप दुःखपूर्ण है और इससे मुक्त होने के लिए इच्छा पर काबू पाना होगा। उन्होंने अपने अनुयाइयों को सरल और सदाचारपूर्ण जीवन जीने और परम संयम तथा विलासिता के बीच मध्यम मार्ग अपनाने के लिए कहा।

बुद्ध का संदेश आम आदमी द्वारा तेजी से स्वीकार कर लिया गया, क्योंकि उन्होंने जनभाषा प्राकृत में संवाद किया, जबकि ब्राह्मण संस्कृत बोलते थे, जिसे आम आदमी नहीं समझता था।

बौद्धों ने अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएं भी अपना लीं और उनके अनुकूल हो गए। उदाहरण के लिए, व क्षों की पूजा एक लोकप्रिय प्रथा थी। बौद्धों ने कहा कि व क्षों की पूजा बोधगया स्थित बोधिव क्ष की पूजा के समान है। बौद्ध परंपराओं के अनुसार बुद्ध ने वहाँ व क्ष के नीचे बैठकर ध्यान किया था और ज्ञान प्राप्त किया था।

म तक के अवशेषों के ऊपर स्मारक के रूप में गोल टीले बनाना एक अन्य लोकप्रिय प्रथा थी। म तक के रिश्तेदार और मित्र इन टीलों पर पूजा किया करते थे। बुद्ध के अनुयाइयों ने इस प्रथा को अपना लिया और स्तूप या टीले बनाए, जिनमें अक्सर बुद्ध के स्म तिचिह्न रहते थे, जैसे कि उनके दांत या ऐसी चीज़ें, जिनके बारे में यह माना जाता है कि बुद्ध ने उनका इस्तेमाल किया था।

चित्र 31.1 बुद्ध

जब बौद्ध धर्म फैला तो बौद्ध भारतीय–यूनानियों के संपर्क में आए, जो उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिम में बस गए थे। अपने देवताओं को मानवों के रूप में प्रस्तुत करना यूनानियों की पुरानी परंपरा थी। बौद्धों ने इस परंपरा को भी अपना लिया और बुद्ध को उसी रूप में प्रस्तुत करने लगे।

बिडाल–कुक्कुट जातक (बिल्ली और मुर्गे की जातक कथा) एक छोटी सी जातक कथा है, जो इस प्रकार है–बिल्ली मुर्गे से कहती है कि वह उससे शादी करना चाहती है। उसकी योजना मुर्गे को पेड़ से नीचे उतारकर खाने की है। पर मुर्गा समझदार है और 'शादी' करने से इंकार कर देता है। बौद्ध उपदेशक बताते हैं कि अपने एक पिछले जन्म में बुद्ध ही वह समझदार मुर्गा थे। इस कथा की मूर्तियों के रूप में जीवंत प्रस्तुति भरहुत (मध्य भारत) में देखें।

बौद्धों ने सैकड़ों लोकप्रिय लोक–कथाएं भी अपना लीं। बौद्ध परंपरा में वे जातकों अथवा बुद्ध की पूर्व जन्म–कथाओं के रूप में जानी जाती हैं। उन्हें बुद्ध के पिछले जन्मों और जीवनों की कहानियां माना गया। इनमें से अनेक कथाएं मूर्तियों के रूप में भी चित्रित की गई हैं।

जातक कथाएं अजंता की गुफाओं की दीवारों पर और सांची के स्तूप (मध्य प्रदेश) के इर्द–गिर्द रेलिंग पर बने चित्रों में भी चित्रित की गई हैं। इन स्थानों पर आनेवाले और इन कलाकृतियों को देखनेवाले स्त्री–पुरुषों के मन में पहले सुनी इन कथाओं की याद ताजा हो जाया करती होगी। साथ ही, इन कथाओं के माध्यम से उन्हें बौद्ध धर्म की शिक्षा भी दी जाती रही होगी।

अपना संदेश फैलाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक साधनों का उपयोग करनेवाले बौद्ध शिक्षक अकेले नहीं थे। अगर हम ईसाई, हिंदू, इस्लाम और जैन धर्म सहित अपनी प्रमुख धार्मिक परंपराओं पर नजर डालें तो पाएंगे कि उनकी दीर्घकालिक सफलता का श्रेय उन अनेक तरीकों को जाता है, जिनसे उन्होंने अपने संदेश संप्रेषित किए, जैसे कि संगीत, चित्र, कथावाचन और उपासना–केंद्र निर्मित करने के लिए प्रयुक्त वास्तुकला की विभिन्न शैलियां।

देवी माता की पूजा के इर्द–गिर्द केंद्रित प्राचीन और लोकप्रिय प्रजनन–उपासनाएं भी बौद्ध धर्म के बढ़ते मिथकशास्त्र में शामिल कर ली गई। प्रत्येक बोधिसत्व एक स्त्री–देवता से जुड़ा था, जिसे तारा कहते थे।

बोधिसत्व इन देवियों के माध्यम से कार्य करते माने जाते थे। पुरूष और महिला शक्तियों का यह मेल अनेक प्रजनन–संप्रदायों की मुख्य विशेषता है। लोक–विश्वासों और प्रथाओं के ऐसे सांस्क तिक अभिप्रायों को अपनाने से बौद्ध धर्म को अपनाना आसान हो गया।

इन गतिविधियों ने जहाँ बौद्ध धर्म की लोकप्रियता बढ़ाई, वहीं बुद्ध की मूल, सरल शिक्षाएं लगभग भुला दी गई। बुद्ध ने चमत्कार दिखने से द ढ़तापूर्वक मना किया था और पूजे जाने के प्रयासों का विरोध किया था। लेकिन अब वे एक देवता माने जाने लगे और बोधिसत्वों द्वारा किए जानेवाले चमत्कारों की कहानियां विश्वास का आधार बन गईं।

बौद्ध धर्म धीरे–धीरे अपने जन्म के देश में ही लुप्त हो गया, सिर्फ इसलिए नहीं कि उसकी मूल, सरल शिक्षाएं खो गईं, बल्कि इसलिए भी कि मठवासियों का जनता से संपर्क नहीं रह गया था, क्योंकि शासकों और व्यापारियों ने मठों को धनवान बना दिया था। नए बौद्ध ग्रंथ संस्क त में लिखे जाने लगे जो आम आदमी की समझ से बाहर थे।

पाठगत प्रश्न 31.3

1. बुद्ध ने किस भाषा में उपदेश दिए थे?

____

2. किसके संपर्क से मानव के रूप में बुद्ध की मूर्तियों की प्रस्तुति प्रारंभ हुई?

____

3. जातक कथाएं क्या हैं?

____

4. रिक्त स्थान भरिए :

   1. स्तूपों की नक्काशी में बुद्ध __________, __________, __________ आदि के रूप में प्रतीकात्मक तौर पर प्रस्तुत किए जाते थे।
   2. ताराएं __________ से जुड़ी स्त्री–देवता थीं।
   3. __________ गोल टीले थे, जिनमें बुद्ध या महत्त्वपूर्ण मठवासियों के स्म तिचिह्न रहते थे।

आपने क्या सीखा

भाषा सांस्कृतिक विचारों की वाहिनी है। संस्कृति का प्रसार जलवायु, भाषा के उच्चारित और लिखित रूप, अभिलेखों, मुद्रण, समाचार पत्र–पत्रिकाओं जैसे कारकों से प्रभावित होता है।

भाषा के साथ–साथ संगीत और न त्य भी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां हैं। संगीत की सार्वभौमिक अपील है। उसके लोक और शास्त्रीय दोनों रूपों ने संस्कृति को सम द्ध किया है, क्योंकि वे भी विचारों को वहन करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. संस्कृति के संप्रेषण के कौन से साधन हैं?
2. संस्कृति के संप्रेषण में भाषण, लेखन और मुद्रण के महत्व का मूल्यांकन कीजिए?
3. विभिन्न विचार संप्रेषित करने में संगीतकारों का क्या महत्व है?
4. संस्कृति के विभिन्न रूपों ने बौद्ध धर्म के प्रसार में किस प्रकार सहायता की?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

1. ब्राह्मी
2. धार्मिक ग्रंथ और शास्त्र
3. वे हाथ से लिखी जाती थीं।
4. (क) गलत, (ख) सही, (ग) गलत, (घ) सही

31.2

1. प्रकृति में परिवर्तन की घटनाओं और जीवन के हर्ष–विषाद का
2. (क) शास्त्रीय संगीत

   (ख) भजन; कव्वालियां

   (ग) विश्व–बंधुत्व; निस्स्वार्थता
3. (क) गलत, (ख) गलत, (ग) सही

31.3

1. प्राकृत
2. यूनानियों के
3. बुद्ध की पूर्व जन्म–कथाएं
4. (क) चक्र, कमल और पीपल के पेड़

   (ख) बोधिसत्व

   (ग) स्तूप